

①

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीशंकराचार्यविरचिते श्रीगणेशस्तोत्रे ॥



2

श्रीराम॥

॥१॥

श्रीमाहागणेश्वरपूजेनमः॥ जयजयजगद्व्यावेदसारा॥ प्रणवरुपाविश्वंजरा॥ कर्तृगणवापरमउदा
रा॥ राघवेद्रश्रीरामा॥॥॥ मनमथदहनहृदयरत्ना॥ चतुरास्यजनकामवरजना॥ मंगलमगिनिमनमोह
ना॥ जगजिवनामकस्विका॥॥॥ लागतां प्रक्यरुपजघाना॥ शरिरप्रालब्ध॥ येतिजनर्था॥ तियेकरवेदन
मानचित॥ शितावज्जमाकरजैसे॥॥॥ बोधकसाकंददृजनुदिनि॥ शांतिसमादयाउन्मनि॥ यविलसा
तमानससदनि॥ जैसेकरिश्रीरामा॥॥॥ विवदआकृतचरचरचना॥ तुष्टिस्वतपमासोतनारायणा॥
वमनदेरवानिविटयेमना॥ विषड्वस्यनानुरमेविदि॥॥॥ आवणकितननवविधामक्ति॥ सत्समागम
द्यडोअहोरात्रि॥ लक्ष्मीचरत्रैकताश्रीपति॥ चतुरास्यजनदती॥ ध्या॥ मासंस्थुकदेहलिंगदेरवा॥ लक्ष्मीपा
श्विलसतिपादक॥ ताटिकातक्राजयोध्यानायका॥ सर्वदाकरजैसेचि॥॥॥ मासंमनजाणिबुधिपाहि॥
वांकिनेपुरहातपाश॥ प्रमपिताबरसर्वदाहि॥ जघनिविलसासर्वदा॥॥॥ मासियापंचप्राणावामका॥
रुक्मपस्कमुगुटकुडलेवनमाका॥ ब्रह्मानदप्रकवच्छका॥ सर्वदाकरजैसेचि॥॥॥ उतरकाडहचिमिम
रथि॥ प्रवाहृत्पंचालसरस्वति॥ तरिदृष्टंतक्षेत्रविराजति॥ येकाहुनियकविशेष॥॥॥ असागतक
थाध्याइइशकर॥ वधुनिविजइरघुविर॥ याउपरसककसुरवर॥ श्रीरामदर्शनाचालिले॥११॥

॥ विजय ॥

॥११॥

2A

सुरां चिदादिजालिबहुत॥ सुगुटाशिमुगुटादकत॥ रनेशककतिभमित्या॥ प्रज्ञानसभायेगगनां वीरि॥ १२॥
 मणगंधर्वयक्षकिन्नर॥ सुरजसुरनखानर॥ सुवेकाचकिंजालेयकत्रा॥ गजरथोरहेतसे॥ १३॥ तौ
 मारुतिलभमनात॥ केकाबाशदेईतरधुनाया॥ जानकिवरत्वरित॥ रावणांतकवदेलकेका॥ १४॥
 क्षणक्षणावायुकुमर॥ विलेकितराधववदनवंदा॥ तौ मारुतिसजयोध्यविहार॥ आज्ञापितापैजा
 ला॥ १५॥ क्षणेप्राणसख्याहनुमंत॥ सत्वराजसिमुपमरिता॥ जनकतनयासौभाग्यस्वरिता॥
 फेटीविजातामजरुग्णि॥ १६॥ विभिषयाप्रतिवागोन॥ शितेशिवालिमंगळस्वानि॥ बस्त्रभक्त
 कारदेउन॥ सुस्वासनातढबाणिजे॥ १७॥ असंजकतांचिहनुमंत॥ निराळपंथेचालिलावरिता॥
 किंतान्हंबळकाननात॥ जायशोधितधनुषा॥ १८॥ किमानससरोवरिंपराकजात॥ किजिवनशो
 धिलक्रुपाकांत॥ किंशंपावलवैनतासुत॥ दर्शनाजातईदरेच्या॥ १९॥ तैसचजशोकवनात॥ प्र
 वेदाताजालाहनुमंत॥ साहांगेशिप्रणिपात॥ जानिकिसकलातेथवा॥ २०॥ तान्कंबळपुका

श्रीराम॥
॥२॥

नगेलें॥ तेंजनिशिभकस्मात्प्रटेलें॥ किंहरपलेंरत्नसांपडेलें॥ तेंसंजालेंजानकिशि॥ २१॥ किं
 प्राणजालांनिशेष॥ वदनिधालिजसुधारसा॥ तेंसंदेखतांजालेंमासतिसा॥ शितापरमतापलि॥ २२॥
 करजोडुनिउभाहुनुमेंत॥ तवजगन्माताकायक्षपत॥ वारेवचनेंतुशिगेडबहुत॥ शितापरमता
 पलि॥ २३॥ अमताहानिलागतिगोड॥ प्राणसखयातुयेथार्थ॥ मजकारणेत्रमलाशिवहुत॥ अ
 योथ्यानथियेकजाण॥ २४॥ षफासीमिवृष्टनेवहुत॥ ज्ञातांमजभटकिंरघुनाथ॥ तेंसंजेंकतांहुनु ॥ विजय॥
 मेंत॥ विभिषणसदनाप्रतिबाला॥ २५॥ सांगसकळवर्तमान॥ शितेसकरविभंगकरनान॥ वस्त्र ॥ २॥
 पुषणेंहेउन॥ चलाधेउनिसुवेढे॥ २६॥ तेंनेनिजानंदलाविभिषण॥ मारुतिसकरिंधसन॥
 प्रवेशलाबशोकवन॥ शितादर्शनध्याविथा॥ २७॥ चिरंजिवहोथेजण॥ रघुपतिचेप्रियप्राण॥
 जानिकिजवळियेउन॥ साहांगलारांगणचातले॥ २८॥ जगन्माताबालवचन॥ जोवरिशशि
 चंडकिण॥ तेंवीरचिरंजिवहोउन॥ राड्यकरिंविभिषणा॥ २९॥ मगविभिषणजोडुनिकर॥ ३०॥

पुत्राहिलाशितेसमोरा ॥ जैसाबपुर्णजवकिकुमारा ॥ कांफरशधरेणुकेपाशिं ॥ ३० ॥ विभिषणह्रणेप्रप
 वरपिणितं ॥ षड्गुणसरितेअदिमाते ॥ अनादिसिध्दअपरमिते ॥ आदिमायेईदरे ॥ ३१ ॥ तुवांअदिपुर
 षजागेकरन ॥ आपिब्रह्माडरचिशिपुर्ण ॥ ब्रह्मविष्णुमरमण ॥ सेवंचिगेकाकरि ॥ ३२ ॥ तुशिंवाके
 तान्हिहे ॥ ३२ ॥ उसतिस्थितिपाकण ॥ करिशिवृत्तियशिसंगेन ॥ ईछापुरतांपुर्ण ॥ सेवंचिगेकाकरि
 शिह ॥ ३३ ॥ तुसंनुजसवठाउके ॥ नेणलपणधरितकेतुके ॥ रावणेनुजअपिलेके ॥ हेहिईछातुशि
 वा ॥ ३४ ॥ बंदिचेसुटलेसुरवरा ॥ मारतिसुथिवादिवाकरा ॥ आस्रशिजालाराममित्र ॥ हाताउपकारतु
 साचि ॥ ३५ ॥ यावरिकरनमंगकस्मान ॥ वस्त्रमुषणअकारन ॥ सुवकशिपाहावयारधुनंदन ॥ शिघ्र
 आतांचलावे ॥ ३६ ॥ जगन्मातकोलवचन ॥ रामनकरितामंगकस्मान ॥ म्याअधिकरितांपुर्ण ॥ वा
 ददुषपापरमहं ॥ ३७ ॥ मारतिल्लणअदिमाते ॥ आज्ञादिधलिरधुनाथे ॥ दुजेविभिषणाच्यावनाते ॥
 मानदिधलापीहेजे ॥ ३८ ॥ अवशह्रणेजनकनंहिनि ॥ तवतेविभिषणाचिराणि ॥ सकळउपचारवउनि ॥

श्रीराम ॥
॥२॥

अशोकवनापाललि ॥३९॥ शरमात्रिजटादोषिजणि ॥ शितेन्याप्राणसांगतिणि ॥ दोषिनिजानक्रिचिवेणि ॥
उकलिलिपैलेधवा ॥४०॥ इन्दुमंतआणिविभिषणा ॥ वेसलेयकिकडेजाउन ॥ ईकडे शरमेनेजानक्रिचंपुजना ॥
आरंभिलेस्वहस्ते ॥४१॥ उत्तमपट्टकुळजाणुनि ॥ शितेशिदिथलिपडहाणि ॥ हेममयचैक्रियाचुनि ॥ प्रायद्युल
लेशरमेने ॥४२॥ सुगंधतैलेवेकि ॥ त्रिजटाशितेनमस्तीक्ष्णलि ॥ सुगंधद्रव्यचिउरणेकलि ॥ खेहाहेरं
रोनिया ॥४३॥ अनंतकूपीरयंता ॥ दोषेनदोषजस्यरिता ॥ मगमहाचिउरणेलाविल ॥ शरमाआपण
स्वहस्ते ॥४४॥ मळिकठिलांक्षणमाये ॥ छत्रजाळिउजकृतनये ॥ असेउष्णदकळवलाहे ॥ सुगंधतप
आणिले ॥४५॥ त्रिजटाउदकघालिसेवग ॥ शरमायाशि शितेचंबंग ॥ तेविभिषणेचिरेंबकंकारसेवग
अमोलिकपाठविले ॥४६॥ प्रकयनिजाहुनितेजागवा ॥ चिरेनेसलिजनकबकि ॥ दिव्यबकंकारलेइति ॥
डिंत्रिभुवनिदुर्लभा ॥४७॥ सुर्यमंडकानुन्यसुरेखा ॥ कृषिश्चकलितारंका ॥ सर्वबकंकाराचेंतेजफांके ॥
दशादिशातेकाळि ॥४८॥ कुकुममळवटलाविलाभाळि ॥ मध्येकसुरिरेखलि ॥ दिव्यसुगंधतेकाळि ॥

विजय ॥
॥२॥

५

(५४)

षण

सर्वगिचर्चितत्रिजरा ॥५९॥ दिव्यफलेषु बाणिलिंके ककिं ॥ जानकिचिवोटे मरिलि ॥ शरमाहणे मुखिं
 धालिं ॥ प्राये फळयेक अतां ॥५०॥ मगळमलफळे सुस्वाद ॥ सुंदरे बाणिलिंके हुतसुगंध ॥ विभिषणमा
 रतिस प्रसाद ॥ जानकिने दिधत ॥५१॥ शरमा बाणिलिंके प्रलि ॥ फळे दिधलिं परमप्रिति ॥ मगये
 कफकधे उनिहाति ॥ वेदनिघातले जानकिने ॥५२॥ पक्वप्रक्षालिले वदन ॥ तो जवळि आला विभि
 षण ॥ दिव्यमणिमयहार बाणुन ॥ जानकिपुढे विका ॥५३॥ त्रिभुवनमालयेक मणि ॥ रावणे विका
 होतलंका मुक्नि ॥ तो विभिदेस प्रलिकरनि ॥ गळ घालि जगन्नात ॥५४॥ तो लंके चें सर्वदक ॥ अ
 ठराहोणि वाद्यें सबक ॥ शिध्दजाले ताका ॥ वाजाला गेलं लेधवा ॥५५॥ रत्नजडिले शिविका आ
 णुनि ॥ शिलेपुढे ठेविले लक्ष्मि ॥ विभिषणमा रतिले चरणि ॥ सुरवासनि वैसावे ॥५६॥ म
 ग शरमे त्रिजटे चें वणि ॥ जानकि घालि द्रढामे ठि ॥ हणो प्राप्स रव्याने लुप्तसि द्रिष्टि ॥ पुढाले कथ
 धिं मिहेरवना ॥५७॥ शरमे त्री जटे चें नयनि ॥ अश्रुचालले नये क्षणि ॥ सहन करिले फुटफुटोनि ॥

॥ श्रीराम ॥
॥ ४१ ॥

चरणमिठवालेनियां ॥ ५५ ॥ मगभापलाकुरळकेशंकरन ॥ शडिलेजानकिचेचरण ॥ पालखिलकैसवि
लिनउन ॥ सद्गृहेउनिबोळति ॥ ५६ ॥ ह्रणप्राणसरव्येजनकनंदिनि ॥ आह्नासनविसेरमनिहुनि ॥ शि
ताह्रणेउपकारसाजणि ॥ तुमचेनविसेरंकराहि ॥ ५७ ॥ तंशिविकेवरिप्रावर्ण ॥ विप्रिषणेचालेनेपूर्ण ॥
जैसापरिस्वकृदिव्यरन ॥ पटिमजिरक्षित ॥ ५८ ॥ कंहरुईरक्षितिज्ञानसंत ॥ बाहेरनहावितिलो
कांत ॥ किंथनज्यजेसाआच्याहित ॥ निजधनआपुले ॥ ५९ ॥ मुळारिनावयुसुत ॥ सम्यग्गिजिव विजय ॥
किचलिन ॥ वामभ्रगिलंकनाथ ॥ विप्रिषणपालितपैलर ॥ ६० ॥ सेनाचलिलिजहुन ॥ पुढेचेत्र ॥ ४१ ॥
पाणिघावत ॥ वाद्यांचापरमगजरहोत ॥ हाटिवहुनपैजालि ॥ ६१ ॥ वहनवाहाकृपवनवेगें ॥ चलि
लेसुवेकेचेमार्गें ॥ विप्रिषणपाहुनमूनरंगें ॥ झाललानितावहुनारि ॥ ६२ ॥ स्कंदबाणिगजवदन ॥
आपणेजवकितोघेजण ॥ तैसेमासतिबाणिविप्रिषण ॥ प्रेमरंगेंघावति ॥ ६३ ॥ रामसेनेतप्रवेशले
सकर ॥ तोजाकाथेकचिगजर ॥ पाहावयाभांवलिवान्तर ॥ त्यांशिवेत्रभरिक्वरिति ॥ ६४ ॥ ०१ ॥

(58)

लंकापतिसहस्रणेजयोध्यविहरि॥ आपलेवेत्रघारिखावरि॥ वानरांशिखाउकाठिनकरि॥ यैसेत्या
 ससंगिडे॥ ६५॥ येथिलेलागिंबहुकष्ट॥ वाळरिसेथिलेउहृष्ट॥ वदनउबडुनिस्पष्ट॥ शिलेला
 गिंपाहुया॥ ६६॥ जवळिअसतांप्राणनाथ॥ लिउद्युडिसर्वजनांत॥ वागतांदोषयथार्थ॥ सर्वथा
 नाहितयेथि॥ ६७॥ अशिजाज्ञाहेतांतेकठि॥ शिचिकानुतरलिमुमंडकिं॥ आवणकठिसांजन
 कर्वाकिं॥ सर्विहेरिबलियकदांचि॥ ६८॥ वहुनाबाहरनिघोनि॥ जेकंतिमुवनपतिचिराणि॥ उ
 थडलिदिअरकारवाणि॥ विदेहतनयाउमितेथि॥ ६९॥ पाहतांजिचियामुखकमळा॥ लपलिको
 टिसुगंककळा॥ किलावण्यसागरिचाउगाळा॥ स्याआलातेराश॥ ७०॥ जानविदेरक्तांसाचा
 रा॥ ह्वगणागंधर्वअसुर॥ मानिविविक्रमसाचारा॥ करिलेजालेकठि॥ ७१॥ थकुडेनपसुंदरा॥
 परमनशासाहृशकरा॥ षण्मासपर्यंतदुराच्यार॥ उगाचकैसाअसेला॥ ७२॥ जोजगदालारघु
 विर॥ जाणोनिसर्वांचेअंतर॥ जानकिशिप्रतिठतर॥ कायबोलताजाहला॥ ७३॥ वाधेवाज

श्रीराम ॥

॥५॥

(6)

तांराहिलिं ॥ तटस्वजाविसुरमंडकि ॥ रिसवान्तरं चिफकि ॥ निवांतसपवैकनि ॥ ७७ ॥ व्यंक्रट
शुकुटियाकरनिकुरा ॥ शिनेशिविलेकिरधुविरा ॥ ह्मणेअपुलाविचार ॥ पाहुंसत्वरयेद्युनि ॥ ७८ ॥
तुजघेउनिगलाअसुरा ॥ ह्मपवादवाढलाअपार ॥ तोअजिनिरसलासमय ॥ सोडवनि तुज
आपिले ॥ ७९ ॥ उरावरतउतरेपाषाण ॥ किंरगगुल्लगेलेविरोन ॥ किंजन्नाधासयेतिनयन ॥
तेविआजसुस्ववाटे ॥ ८० ॥ तुजआहिसाअन ॥ सचिकेलेआपुतेवचन ॥ आतांकरावेगमन ॥
मनाआवेडविकेडेचि ॥ ८१ ॥ मिसर्वहिंसंगसाडुनि ॥ उदासविचरतेकांननि ॥ कामकामनाका
हिमनि ॥ उरिलेनाहिआमुच्या ॥ ८२ ॥ आनुचिवाताटकुनिसमस्त ॥ मनाआवेडतोघरावाप
थ ॥ अथवाअलतानुपनाथ ॥ वीरंतुजआवेडलतो ॥ ८३ ॥ उमेराहोनव्यर्थचिकाई ॥ विचरेतुंम
लेतगई ॥ मोक्क्यातुजदिशादाहि ॥ केन्नाआहियेधवां ॥ ८४ ॥ मजकैकैनेघातेलेबाहुरा ॥ ना
हिंशिकासनअलपत्र ॥ सेउनघोरकांतार ॥ वनचरपंसुरिवेकैले ॥ ८५ ॥ मक्षावयानिमिळजन्ता ॥

विजय ॥
॥५॥

68

राहुं कंदमुठं सेउन ॥ वत्कले परिधान करन ॥ रूपासनि निजतो ॥ ५३ ॥ या करितां शिते पां हिं ॥
 आमुचे संगति स सुखना हिं ॥ तरितुं जल त्यापं थें जाई ॥ व्यर्थ कं हि करारुन को ॥ ५४ ॥ सब कउ
 पाधि टा कुन ॥ गिरा हि ले निरंज नये उन ॥ आतां आनासना वेडु जपण ॥ प्रपंच व्यसन न स
 तेचि ॥ ५५ ॥ ऐसे वोलतार घुनाथ ॥ जान किस वाटला कळोत ॥ किशब्द से पंशस्त्र घात ॥ अक
 स्माज विस्वेचे ॥ ५६ ॥ किशब्दन कलि से दारिणि ॥ आगावरि पड्मात ये क्षणि ॥ किशब्द
 सांडसे कतनि ॥ तोडिले वाटे शरिर ॥ ५७ ॥ परम ये वेरं दारिणि ॥ बोलते कामंगळ अगिनि ॥
 अग्नि तकरपे कर्मळणि ॥ तैसे तेज उलरेले ॥ ५८ ॥ नयनि फुट्मा अशुधारा ॥ ह्येण जगदं च्या
 रामचंद्रा ॥ आनंद सागरा का रूपाकरा ॥ करामाशा वधवातां ॥ ५९ ॥ घुडमत्स्य कश्चि उन ॥ आ
 जिद्रिष्टे रिव ले रामचरण ॥ तो पूर्व कर्म मासे गहन ॥ आड विद्धे हजाले ॥ ६० ॥ आनंदचा उग
 वला हिन ॥ ह्येणो निवाटे ले समाधान ॥ परिकर्मा चें धोर विद्वान ॥ पुढं टा कित पैजाले ॥ ६१ ॥

श्रीराम॥

॥६॥

(३)

कामधनुचिकाडिलाधार॥ स्वइच्छामरलेरचिक्रपात्रा॥ अमृतचेतादिंघातलाकर॥ तोंविषदुर्घरम
रलेबसे॥ १५॥ परिसव्यादेवासयेतब॥ लेहनामककोटकापुर्णा॥ परितोकदानकेब्युवर्णा॥ कर्म
गहनपुविचे॥ १६॥ मृगेद्रंज्यात्रिकरिधारेले॥ त्याशिजंबुकेउमंफाडिले॥ सुपर्णग्रहिंप्राणिरहि
ले॥ त्याशिस्वाडिलेविरपरि॥ १७॥ याचकलवलाहयांविला॥ कन्यतरस्वालेनाला॥ त्याशिह
क्षेमारकेला॥ शुष्ककाष्टेधनिया॥ १८॥ व्याघ्रमारनिलवलाहं॥ धन्यानेसेडविलिगाया॥ मग ॥ विजय॥
काष्टप्रहरंतिसपाहं॥ कांहाव्यथमारवं॥ १९॥ सागरापुरिवुडतांप्राणि॥ कुडकाडिलाधावेनि॥ म ॥ ॥६॥
गस्वयंशस्त्रकाडुनि॥ कांजिव्यथमारवं॥ २०॥ सागराथिभक्तनिलवलाहि॥ सागराशरणगे
लिपाहि॥ नेह्रपठाववाहि॥ मगगत्किथातसिमगा॥ २१॥ जळचरांठावनेदिनिर॥ पुढंकायत्या
चाक्वारा॥ पक्ष्यांवरिकोपलेजवर॥ नरिनिहंजावेकोवे॥ २२॥ जळलेधुविहुनकाडिले॥ माग
तिवणवेयांतलेटिले॥ कृत्तणेव्यासमुद्रासजाले॥ भरलेंकुरनवलपे॥ २३॥ ६९ २२ ६९॥

७A

ध

मातेनवाक्कासुद्विधेनेविष॥पित्तानेविक्रितेपुत्रास॥धन्यानेद्वडिलेदशिस॥कायचालेकोणत्वे॥४॥
 कासिसत्वाविलेक्षुपकरन॥मगमध्येचद्विधेलेसोडुन॥लेणेकोणासजावेशरणा॥तयेवेकेसांगपा॥५॥
 अन्नार्थिपत्रिवैसले॥तेदालयानेमासनद्वडिले॥परित्यक्तेवक्काहिनचने॥तैसेजालेयेथेहि
 ॥६॥सुर्यकोपलाकिणावरि॥समुद्रनहरियशिंदेवोरि॥अमृतमधुरताबाहरि॥जापुले
 घालुशुद्धितस॥७॥जापुन्माशास्वशिवब्रह्मा॥कन्नब्रमेधरियत॥चंद्रककांचात्यागमाडित॥
 मरुकोपलाशिखरावरि॥८॥जैशिभागराधदापान॥किंसर्वदांनिर्मळअन्न॥किंहरिमकांचेजा
 चरण॥शुचिभंतसर्वंगा॥९॥दशकिंदरगेजाघन॥मोहोरिहुनअन्यायमान॥मेसईनुकादंडपु
 र्णा॥समर्थहाआरंभिला॥१०॥वातेकांपेकमळणा॥तिवीरवज्रटाकिजेउचलेनि॥अन्यायनस
 तांकुरंगिणे॥कांवनिव्यथेमारवि॥११॥उंस्वलगकिंशुद्धसुवर्ण॥हेंअग्निसेगंककेपुर्ण॥तरि
 मिआतांदिव्यदेईन॥सर्वांगेकरनयेथेचि॥१२॥नयनिवाहलिनश्रुपात॥जानकिवान्नरंशिना

8

॥ श्रीराम ॥
॥ ७ ॥

ज्ञापित ॥ श्रेणकुंडकरुनिअरुत ॥ अन्नसत्वरपाजका ॥ १३ ॥ तात्काकविस्पर्णकेलेंकुंड ॥ काष्टप
वतघातकउदंड ॥ नमिज्वाकाप्रज्जकत्मात्रचंड ॥ निराकयासुंधावति ॥ १४ ॥ जगन्माताबोल
वचन ॥ तरिमिशुचिषंतअसेन ॥ तरिचयेईनपरतेन ॥ चरणपाहावथास्वामिचे ॥ १५ ॥ जरि
मिदोपिअसेनपुर्ण ॥ तरिअस्मकरिलवडवाय ॥ असेतेकंबोलोन ॥ सरसावलिजानकि ॥ १६ ॥
सुरासुरवाब्बरमुनेश्वर ॥ अवधेजातेचिंतातुर ॥ प्रणतिहाअनर्थथोर ॥ सुखामाजिमाडला ॥ १७ ॥
॥ १७ ॥ असोरणमाजलेहेखोनि ॥ विरनिअकतेःकृष्ण ॥ तैशिअग्निसेभोरजनकनंदिनि ॥ १८ ॥
नमिभानिक्रदाहि ॥ १५ ॥ कुंडासकृतिप्रदुषणा ॥ द्रष्टिभारिपाहिलंरघुनंदना ॥ कंठिचासुमनह
रकाहुनिजाणा ॥ अग्निवरिटाकिला ॥ १९ ॥ सत्यजयसत्यजयप्रणानि ॥ त्रिवारगजजनकनं
दिनि ॥ अग्निकुंडिलयेक्षणि ॥ उडिद्याललिअकस्मात ॥ २० ॥ मंगळजननिचेहृदयरल ॥ अग्निमा
जिपडतांजाणा ॥ कंब्यागांजिलिहणान ॥ पृथिव्यापलिथरथरा ॥ २१ ॥ जालायेकचिहाहाकार ॥

॥ विजय ॥
॥ ७ ॥

शोकार्णविंपडलेवाब्जं॥ सककव्याकुलसुरवर॥ प्रकयकाकव्यंशिमासे॥२२॥ दृशद्विगामाजिदि
 टलाधुर॥ केठांलागलं समुद्रनिर॥ वैकुण्ठकवाससमग्र॥ डलांलागलं लघवां॥२३॥ धरधरांकांपे
 लंबर॥ नक्षत्रंस्त्रिवलिवपार॥ सौमित्रमस्तनिलिवाणिवानं॥ नेत्रिंउदकयकिलि॥२४॥ ध्रुगलि
 अग्निमुरिनेहुनपुठलि॥ पुष्पकैचिदेस्वोसितासति॥ कैशिकर्मचिगाहनगति॥ परमदुर्धस्वा
 टनसे॥२५॥ यकघटिकापर्यंत॥ अग्निगजिजानक्रियुस॥ तोमस्तकिंपुष्पंधवधवित॥ अकस्मा
 लनिघालि॥२६॥ पहिळातपाहुनिआगलि॥ शत्रुगुणेंसपवांगले॥ प्रमेनेनुमंडकभरले॥ आ
 धिर्यजालेलेवेकि॥२७॥ मागेंबरपयकांतिवतना॥ ररेवंतगुसजालिहोतिशिवा॥ तेंस्वतपप्रध
 टलेजालं॥ मिस्यदिव्याचेंकरोनियां॥२८॥ शितास्वतपजालाहोताअग्नि॥ तेंपेराससवनजाकुनि॥
 आपुष्मास्वसपियेउनि॥ दिव्यरूपमिकाला॥२९॥ शीलारामाचिचिःछलि॥ गेलिचनोहिंलंकेव्रति॥
 हुरनुषसंतजाणति॥ जेकांवेदांतिसज्ञान॥३०॥ असोजानकिदेस्वतांसाचार॥ जालायेकचिज

९

॥ श्रीराम ॥

॥ ८ ॥

यजयकार ॥ अष्टादशपञ्चवाब्दरा ॥ नमस्कार बालित्ति ॥ ३१ ॥ मगपुष्पाचे संभार ॥ शितेर्वरिदकि
त्सुरवर ॥ ह्यणतिहृन्पतिपवित्रा ॥ नमस्कार सर्वकरिति ॥ ३२ ॥ सौमित्रसुग्रिवविभिषण ॥ जा
नकि सघालितिलोटांगण ॥ हनुमंतें नमुनिचरणा ॥ आनंदें पुर्णनाचतसे ॥ ३३ ॥ असो श्रीरा
माकडे शितासति ॥ बालिलितेकां हंसगति ॥ मगपुठे नियां रघुपति ॥ उभाठाकलातेवेके ॥ ३४ ॥
श्रीराममुखविलोकन ॥ शिताकरिहास्यवदन ॥ बांवेनिद्रुदधरिलेचरणा ॥ सद्दृष्टितेका ॥ विजय ॥
किं ॥ ३५ ॥ मगजानकिशिउठउनि ॥ धेमेहेतके उपपि ॥ वामांकावरिधेउनि ॥ रघुनाथतेका ॥ ८ ॥
वैसला ॥ ३६ ॥ नृवमधुरंगरघुनाथ ॥ जानकिव्युक्तलातकपत ॥ शितारामदेखानिसमस्त ॥
जयजयकारसर्वकरिति ॥ ३७ ॥ सुरांविवाद्येतेकाकि ॥ माहायजरंगजोलागति ॥ आज्ञाच्या
वयातेकाकि ॥ देवउतेदिपेजाले ॥ ३८ ॥ सदाशिवह्यणरेधातमा ॥ पुराणपुरषापुरणब्रह्मा ॥
आनंदकंदानिजसुरवधामा ॥ सच्चिदानंदश्रीरामचंद्रा ॥ ३९ ॥ रघुकुंकुषुषणजकजनेत्रा ॥

जनकजामातानिकगात्रा॥ महिमासुखासहस्रवक्त्रा॥ वर्णिकापैनवजाय॥ ४७॥ चराचरजिवनाचित्वाक
 का॥ अनंतब्रह्माडनायका॥ तुष्टपाकराक्षसकक्रां॥ निजमकांशिविविशि॥ ४९॥ युगायुगिधरिशि
 अवतार॥ महिलेपापदुष्टजसुरा॥ परियेअवलरि॥ चरित्रा॥ अगाधदविले श्रीरामा॥ ४२॥ माशियेमनि
 आर्तबहुल॥ क्रिकेकोदरेनरस्थुनाय॥ तुसियानामंकरनिशाल॥ हुकाहुकजालेपैमासे॥ ४३॥ अतिंशि
 लेसहितरामचंद्रा॥ सत्करजाकेअयोध्यापुरा॥ जैसेवोअतांरूपुरगौरा॥ राघवकायबालल॥ ४४॥ ह्मणेतुमा
 शआराध्यदेवता॥ अनाधिस्थिकैलासनय॥ विष्णुमरतुविश्वानित॥ करणिअजुनदाविशि॥ ४५॥
 ब्रह्माडजाकिलहुकाहुक॥ लेकाकंनिधिरिलवाकिक॥ लोकसुखिवरदिलेसकुक॥ परमदयाकलुं
 शि॥ ४६॥ माशिस्तुतिमाडिलिदयाका॥ भिकायआहुतुजवगका॥ जैसेरामबालतलेवेका॥ बालता
 जालिकेमकोइव॥ ४७॥ ह्मणेद्विराख्यवाशिनारायेणा॥ मधुवैष्णवगिरिभवभंजन॥ अनंतवेशाअन
 तवदना॥ अनंतशायनाअनता॥ ४८॥ परमात्मयातुंमाज्ञानता॥ नाभिकमकिंजन्मलोयेथार्था॥

श्रीराम ॥
॥१॥

अष्टरची लिहे बहुत ॥ तुझे बाजे करुनियां ॥ १९१ ॥ अष्टिमाजिमाजले असुरा ॥ रावण कुंजकर्णादिकुरा ॥
 मंगलुवांधरिला अवतारा ॥ अयोध्येमाजियारुपे ॥ १९० ॥ पितृबाजेचे करुनिमिस ॥ काननाबालाशिपर
 मपुत्रका ॥ शितेच्या निमित्ते रावणास ॥ वधुनिमकरासिले ॥ १९१ ॥ राधवक्षणेकमकासना ॥ विश्वजनकावेद
 पाळणा ॥ सकळ लक्षात्थ वले रवना ॥ जाण शिरवुणसर्वहि ॥ १९२ ॥ तुलाबासावे गळें पणा ॥ मुकापान्मुनि
 नाहिजाणा ॥ परस्ये रवाउकिरवुणा ॥ तरि बाहरसीती किमर्थ ॥ १९३ ॥ पुर्णमेस उचें वळे समुद्रा ॥ तैसा बो ॥ विजया ॥
 लताजाला देवेद्रा ॥ अयोध्यानाथ जगदाधारा ॥ जन्मानदापरासरा ॥ १९४ ॥ बासाशि उपकारके लंबदुता ॥ १९५ ॥
 तैवेदासहिनेके गणित ॥ बंधछेदकुंतुं रघुनाथ ॥ अपरमितगुणतुंसे ॥ १९६ ॥ तरिमासिये मानिये कजा
 तै ॥ तेतुपुर्ण करितारघुनाथ ॥ कालिबाजामजालरित ॥ केलिपाहिजे येकाकिं ॥ १९७ ॥ मिदासानुदास
 जनन्य ॥ मजकाहि सांगावे कानना ॥ तुझे बाजामिमस्ती किंवेदिना ॥ मुगुटमणिजयापरि ॥ १९८ ॥
 जैसेंबोलता देवेद्रा ॥ परमषंतोषलारामचंद्र ॥ क्षणेसरुसाक्षातुं परमवचुरा ॥ समउपकारके लाजि ॥ १९९ ॥

१०५

रणिपाठविकदिव्यस्थ ॥ तोआह्राशिउपकारबहुत ॥ आह्रिजयपवलोप्रास ॥ त्याचरीथेंवैसोनियां
 ॥ ५९ ॥ इद्रुणोजिष्ठीरामा ॥ निजमककामकअद्रुमा ॥ तुशियाप्रसादमंगळधामा ॥ आह्रिस्वपदिसु
 रिकवसे ॥ ६० ॥ रथपाठविलासमयाशि ॥ ह्यणनिहाउपकारमानिसि ॥ चकारानेकायचंद्राशि ॥ त्र
 सकरावेंकोणगुणे ॥ ६१ ॥ व्यतिक्रत्रसक्रलाजळधरा ॥ चक्रनाक्रानिदिवाकर ॥ समुद्रासत्रस्यिस्त्ररा
 कोणगुणेकुरावे ॥ ६२ ॥ वैरागरापुढेठवलागर ॥ शिराब्धिपुढेसमीपलेनिर ॥ परमधनाढयेकुर्वर ॥
 त्यासकवडिसमीपलि ॥ ६३ ॥ आनांअसोहशरचक्रा ॥ मजकांहितरकरविआज्ञा ॥ ह्यणनिद्रुण
 मलाचरणा ॥ प्रमादरेकरोनियां ॥ ६४ ॥ मर्गदिसनेकांउठउन ॥ बोलैराधुवसुहास्यवदन ॥ जेणे
 कृतनिपैकर्ण ॥ त्रसहोतिसक्रकांचे ॥ ६५ ॥ ह्यणवदशास्त्रिवहुत ॥ धर्माधर्मनिवडितिपडित ॥ तरि
 येकचगोहितसूमस्त ॥ पापपुण्यनिवेड ॥ ६६ ॥ परोपकारतंपुण्यबहुत ॥ परपिडातेपापयथार्थ ॥
 शोधावेकिमथेग्रंथा ॥ सुरव्यभ्रतितार्थहाचिपै ॥ ६७ ॥ तरिअसाजोपरोपकारा ॥ वान्तराशिधडलाअपारा ॥

11

श्रीराम ॥
॥११०॥

मजसाह्यहोउतिसमग्र ॥ यशबहुतजोडले ॥ ६५ ॥ समरंगणिदिद्येलेप्राणा ॥ असंख्यपडलेप्रेलंहेउना ॥
 परित्याचेकृदंबआसजन ॥ शोकार्णविवुडति ॥ ६६ ॥ तरिहेमासेपरवेवान्तर ॥ पुन्हंजिवविसमग्र ॥
 कोठंजागावरिअणुमात्र ॥ दायवणनदिसावे ॥ ६७ ॥ तरिहचिजाशसकरा ॥ सिध्धिपावीनंअमरेश्व
 ना ॥ अनेबोवतापरासरसाशरा ॥ आनंदजावात्मसाशि ॥ ६८ ॥ इंद्रचरणिमाथाठउना ॥ फुणजि
 ववितांनतागताक्षणा ॥ यानुपरिशितारमया ॥ आनादितसककाशि ॥ ६९ ॥ देववैसोनिचालिलेवि
 मनि ॥ अडकलदुदुमिच्याध्वनि ॥ दिव्यचंद्रवाडीतेगयनि ॥ आनंदमनिवसमाया ॥ ७० ॥ शक्रा
 शिजाशहाताशडकार ॥ पियुषमधवाकलाअवशि ॥ गंभिरगजनलिअवसरि ॥ क्रिसाजाना
 बहुकाक ॥ ७१ ॥ पञ्चमसवापुमरव ॥ शिलकसादांमिनिलरवलीखेत ॥ अपारवर्षलेअमृत ॥
 रणमंडकलधुनियां ॥ ७२ ॥ धटिकायुकपथंत ॥ राष्ट्रजालिअभुत ॥ वानरउठलेसमस्त ॥ निद्रिस्त
 जागहोविजैसे ॥ ७३ ॥ श्रीरामापुढजाउन ॥ धालितिसमस्तलोयगण ॥ प्रजन्यगलाउघडाना ॥

॥विजय॥
॥११०॥

॥ १४ ॥

सहस्रनयनवाशने ॥ ७७ ॥ आर्क्षपितिश्रोलेचतुर ॥ वाङ्मरअणिरजनिचर ॥ येकेउर्दिप
 उलेसमग्र ॥ तरिअसुरकांनउठति ॥ ७८ ॥ वक्रह्रणनाटकरामायेण ॥ तेथेहेक्यावाह्लिसेपु
 ष ॥ स्वयेवेकिलावजनिवदन ॥ अप्रमाणकोणप्रणो ॥ ७९ ॥ लेसंमलपाहिनसाचार ॥ प्रत्या
 तरस्त्वभिघर ॥ तरिभुलावकिशंक्रेसमग्र ॥ अपिचहोत्यापाठविल्ला ॥ ८० ॥ त्यांस्वजाज्ञापि
 लेशकरे ॥ जमहाविक्रपिचिक्रिकेरे ॥ राक्षसपिप्रतंतरे ॥ निवृजियांअक्षीवि ॥ ८१ ॥
 स्वाटियातुनवरनिवडे ॥ किंतादुकातुननिवडेतिखडे ॥ किहिरयांतुनितुकेडे ॥ गारेचे
 जैसनिवडति ॥ ८२ ॥ लेशभुलावकिनिवडति ॥ राक्षसप्रलेसर्वमहित ॥ समुद्रांभिरका
 पिक्याजस्ति ॥ जउरहितक्राहिव ॥ ८३ ॥ पियुषहृष्टिहोतिअपास ॥ उठलेअवघेचवानर ॥
 जैसेजकलांप्रत्यातर ॥ श्रोतेपंडितसुखावति ॥ ८४ ॥ ह्रणशिहोशिचतुर ॥ शार्थद्रिष्टितुंशि
 अपार ॥ संशयनिरसनासमग्र ॥ जैसावंधःकारसुयोर्दि ॥ ८५ ॥ यासामजिहरककादुन ॥

श्रीराम ॥
॥११॥

पुढेवालेमोजन ॥ तैसासंशयनिरसुनपुर्ण ॥ अनुसंधानपुढेचाले ॥ ८६ ॥ रघुनाथप्रभोविभ्रिषण ॥
 आतांआधासदेईजेबाजा ॥ असेखोलतांरामराणा ॥ विभ्रिषणदात्लागहिवरे ॥ ८७ ॥ तेनुत
 नलंक्रनाथा ॥ फुंदफुदांतेकांरडत ॥ चरणमिदधालित ॥ पदहाकितनयनोदके ॥ ८८ ॥ स्त्रणेलं च
 काराजमेकउन ॥ जालोशिमजराकुन ॥ जनतराजैवावाकुन ॥ तुश्यारिणावसनिटाकिनपै ॥ ८९ ॥ ॥विजय॥
 तुशियामजजाकसन ॥ मोहासांडवावेनाकुन ॥ तेथे लंकेचंराजत्रण ॥ मडाकायलेकरावे ॥ ९० ॥ मि ॥११॥
 अयोध्येसयेईनसांगते ॥ सेवाकृतनिराहणते ॥ असेखोलतारघुनाथे ॥ हृदईधरिलखिमिषण ॥ ९१ ॥
 प्राणसरवयातुसेहृदई ॥ मित्रवसतोसवेद ॥ रिंतुआतांअयोध्येसयेई ॥ समाग्रमेवकिंवता ॥ ९२ ॥
 अयोध्येचासोहाकापाहोन ॥ तुंजाणिमित्रनंदना ॥ मंगलेधुनिपरलाहोषेजण ॥ आपुलियाराज्याशि ॥ ९३ ॥
 परमतोपलाविभ्रिषण ॥ आणविलंपुष्पवृविमान ॥ अत्यंतविशक्युणगहन ॥ आज्ञापाकितप्रभुचि ॥ ९४ ॥
 चंद्राहुनिप्रभाअसता ॥ मुख्यसिकासनमध्यविराजत ॥ दिव्यरत्नमंडित ॥ शालरशोमिमुक्तांचि ॥ ९५ ॥

12A

पृथ्विसांठवेसंपुर्ण॥असेक्षणेहोयविस्तिर्ण॥ईछहोतंभिसंकोचोन॥धाकुटंहोयतेकांत्वि॥१६॥असेविमा
 नलेकाकिं॥शेवक्रिष्णापिलरामाजवलि॥तजंजिलउनियोज्रकिं॥विमानरघोतमेवंदिले॥१७॥शिलेचि
 जोगोकिश्चतन॥दिव्यहिरियांचेसोपान॥त्याचमार्गेरघुनहन॥वरिचढलातेकाकिं॥१८॥शिलेसमेवत
 रघुनाथ॥मुख्यसिंहासनादीस्वैसता॥अष्टशपदसमस्त॥वाग्जरवरिचिठियेले॥१९॥छपन्नकोटिगे
 कागुक्क॥बाह्यतरकोटिरससक्रक॥विनिष्पणाचढस्यव्यदक॥आजढलेतेधवां॥२०॥अष्टादशमात्र
 सोणि॥लागिलेवाजंत्रांचिध्वानि॥अष्टजुर्मातवज्रहोनि॥राघवापुढेंउभेराहिले॥२१॥मगांकवर्णान्या
 मरेखेउवा॥अंगदबाणिलक्षुमणा॥वीरवीरिचिठियेजणा॥समस्तमानदोहिकेडा॥२२॥असेआत्तारघुना
 थ॥लक्षुनिजयोध्येचापथ॥राजाधिराजसमथे॥जाताजालातेकाकिं॥२३॥रामविजयरत्नस्वाणि॥उत
 रकांडहामुगुष्माणि॥पुढंश्रवणकरावेसज्जनि॥ज्जानंदकरोनियां॥२४॥ज्जानंदरयतेश्वर॥जोपुर्णज्ञा
 नाचासमुद्र॥त्याचेचरीणश्रीधरत्नमरा॥असंगंतजिवालिलसे॥२५॥रामविजयग्रंथसुंदर॥संमत
 वात्तिकनाटकाधार॥सदांपरिसोतचतुर॥चौतिसावाबाध्यायगोडहा॥२६॥०॥०॥०॥०॥०॥०

६

(B)

विजया
१९२॥

॥ श्रीनामचौविसावाजाध्यायसमाप्तः ॥



विजया
१९२॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com